8. पुष्प की अभिलाषा, जवानी (माखनलाल चतुर्वेदी)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माखन लाल चतुर्वेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 ई. को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई नामक स्थान पर हुआ था।

2. माखनलाल जी के पिता का क्या नाम था?

उ०– माखनलाल जी के पिता का नाम पं० नंदलाल चतुर्वेदी था।

2. माखनलाल जी ने घरेलु अध्ययन से किन-किन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया?

उ०– माखनलाल जी ने घरेलु अध्ययन से संस्कृत, बाँग्ला, गुजराती और अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

4. माखनलाल जी ने किन-किन पत्रिकाओं का संपादन किया था?

उ०– माखनलाल जी ने कर्मवीर व प्रभा पत्रिकाओं का संपादन किया।

5. माखनलाल जी किसके संपर्क में आकर स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में सम्मिलित हो गए?

उ०– माखनलाल जी गणेशशंकर विद्यार्थी के संपर्क में आकर स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में सम्मिलित हो गए।

6. माखनलाल जी किस सम्मेलन के अध्यक्ष रहे?

उ०– माखनलाल जी 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष रहे।

7. माखनलाल जी को भारत सरकार ने किस उपाधि से सम्मानित किया?

उ०– माखनलाल जी को भारत सरकार ने 'पद्म विभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

8. माखनलाल जी की किस रचना के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला?

उ०– माखनलाल जी को 'हिमतरंगिनी' रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

9. माखनलाल जी किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग करते थे?

उ०– माखनलाल जी शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली भाषा व ओजपूर्ण भावात्मक शैली का प्रयोग करते थे।

10. माखनलाल जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– माखनलाल जी की मृत्यु 30 जनवरी सन् 1968 ई. को हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पुष्प को किन-किन बातों की चाह नहीं है और क्यों?

उ०– पुष्प को किसी भी प्रकार का सम्मान पाने, देवकन्या के आभूषण में गूँथने, प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लिए बनाई गई माला में बिंधकर प्रेमिका को आकर्षित करने, सम्राटों के शवों पर चढ़कर सम्मान पाने व श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य देवी-देवताओं के मस्तक पर चढ़कर अपने भाग्य पर इतराने की चाह नहीं है क्योंकि पुष्प इस प्रकार के किसी भी सम्मान को व्यर्थ एवं निरर्थक मानता है।

2. 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता से आपको क्या संदेश मिलता है?

उ०– 'पुष्प की अभिलाषा' कविता से हमें देशप्रेम की भावना का संदेश मिलता है। इस कविता में पुष्प किसी भी प्रकार के सम्मान को व्यर्थ एवं निरर्थक समझता है वह तो उस मार्ग पर अर्पित होना चाहता है जिस मार्ग से राष्ट्रभक्त वीरों की टोलियाँ मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ देने के लिए जाती हैं। वह देशप्रेम अर्थात् मातृभूमि के लिए बलिदान के मार्ग में स्वयं को अर्पित करने में ही सुख अनुभव करता है। अत: हमें इस कविता के माध्यम से मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित करने की प्रेरणा मिलती है।

3. 'जवानी' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उ०– जवानी कविता के माध्यम से कवि भारतीय नौजवान युवकों को देशप्रेम के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को बलिदान करने के लिए कहना चाहता है। वह देश की युवा शक्ति के उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के कार्यों में प्रवृत होने के लिए प्रेरित करता है जिससे कि यह युवा शक्ति देश की परिस्थितियों को बदल सके।

कवि देश के युवकों को वृक्ष व फलों आदि के उदाहरण देकर परोपकार की भावना के लिए प्रेरित करता है तथा नवयुवकों को स्वाभिमान के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा अपने पूर्वजों द्वारा बनाए गए मार्ग पर चलने के लिए कहता है।

4. 'गोद में मणियाँ समेट 'खगोल आया' से कवि का क्या आशय है?

उ०– यहाँ कवि का आशय है कि समय तो परिवर्तनशील होता है। ब्रह्मांड जिन ग्रह-नक्षत्रों रूपी मणियों को गोद में लेकर घूमता है, वे भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट है। अर्थात् समय का भूगोल हमेशा एक समान नहीं रहता। तुमने जब जब क्रांति की है, तब-तब यह बदलता रहा अर्थात् नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। जिस प्रकार आकाश मंडल में विभिन्न विस्फोटों के बाद ही ग्रह नक्षत्रों का निर्माण हुआ है, जो ब्रह्मांड में मणियों के समान लगते हैं। उसी प्रकार तुम भी क्रांति के द्वारा देश में परिवर्तन लाओ।

5. 'जवानी' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– जवानी कविता माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'हिमकिरीटिनी' काव्य संग्रह से ली गई है। चतुर्वेदी जी महान् राष्ट्रभक्त कवियों में से एक हैं। कवि चतुर्वेदी जी ने प्रस्तुत कविता में नौजवानों को संबोधित किया है और कहा है कि हे जवानी! वह तू ही तो है जो अपने अंदर उत्साह शक्ति और प्राणवत्ता को समेटे हुए है। कवि कहता है कि तू अपना तेज खो चुकी है। मैं तो जिधर भी अपनी नजर डालता हूँ मुझे वहाँ गति ही दिखाई देती है। फिर यह संभव नहीं है कि तू ठहर जाए। अगर इस गतिशील समय में तू ठहर गई तो तू दो शताब्दी पिछड़ जाएगी। कवि जवानी से कहते हैं कि तू बलिदान करने के लिए तत्पर रह। समर्पण की आवश्यकता होने पर तू पीछे मत हट। तू आलस्य का त्याग कर दे और क्रांति के लिए तैयार हो जा। प्रस्तुत कविता में युवकों का आह्वान करते हुए उन्हें मातृभूमि के लिए बलिदान करने के लिए प्रेरित किया गया है। कवि कहता है कि हे नवयुवकों! तुम अपने आपको बलिदान करके इस धरती को कंपित कर दो तथा हिमालय के एक-एक कण के लिए स्वयं को समर्पित कर दो। युवकों को अपने ऊँचे संकल्पों के बल पर सभी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। कवि ने वृक्षों तथा फलों के माध्यम से युवाओं के मन में बलिदान का संकल्प लेकर सिर गर्व से उठाने की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया है। यहाँ युवाओं को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी गई है। उन्हें कायर, स्वाभिमान से रहित और परतंत्र प्रकृति वाले कुत्तों जैसे व्यक्तियों के साथ जीवन-निर्वाह न करने को कहा गया है। कविता में कवि ने अपने पूर्वजों द्वारा दिखाए गए मार्ग को अपनाने के लिए युवाओं को प्रेरित किया है। हमारे पूर्वज देश के स्वाभिमान के लिए मर मिट गए हैं। युवक जिन स्थानों पर अपना बलिदान करते हैं, वे स्थान पृथ्वी के तीर्थ समझे जाते हैं। समय परिवर्तनशील है। समय का भूगोल हमेशा एक जैसा नहीं रहा। ब्रह्मांड ग्रह नक्षत्रों को अपनी गोद में लेकर घूमता है, वह भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट है। जो व्यक्ति प्रलय के स्वप्न देखते हैं उनके लिए विशाल पृथ्वी भी तरबूज जैसी छोटी वस्तु बन जाती है। अर्थात् इस धरती को भी दो टुकड़ों में विभाजित कर सकते हैं।

कवि कहते हैं कि हे युवकों! यदि तुम्हारा खून लाल नहीं है और तुम्हारे मुख पर ओज नहीं है तो तुम भारतमाता के पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हो। तब तुम्हारा कंकाल देश के लिए किसी भी प्रकार काम नहीं आएगा। कवि कहते हैं कि चाहे वेदों के उपदेश हो या स्वयं देवताओं के मुख से निकली आकाशवाणी हो, अगर वह युवाओं में उत्साह नहीं जगाती तो वह निरर्थक है। यह संसार शस्त्र बल का नहीं है, दृढ़ संकल्प का है। किसी भी क्रांति का उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना होता है, जिसे दृढ़-निश्चय से प्राप्त किया जा सकता है। दृढ़ संकल्प से मर मिटने की भावना जाग्रत होने पर, ऐसे व्यक्ति अपने मार्ग से विचलित नहीं होते हैं। हे युवकों! जीवन में जवानी उसी का नाम है जो मृत्यु को उत्सव और उल्लासपूर्ण क्षण समझे। जीवन में बलिदान का दिन ही जीवन का सबसे उल्लासपूर्ण त्योहार होता है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– माखनलाल चतुर्वेदी महान राष्ट्रभक्त कवियों में से एक हैं। परतंत्र भारतीयों की दीन-हीन दशा को देखकर इनकी आत्मा अत्यधिक व्याकुल हो गई। ये उन कवियों में से एक थे, जो अपना सर्वस्व त्यागकर भी अपने देश का उत्थान करना चाहते थे। राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण होने के कारण ही इन्हें हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में 'भारतीय आत्मा' के नाम से जाना जाता है। डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, माखनलाल जी के राष्ट्रीय भावना से संबंधित गीतों से अत्यधिक प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने उनके बारे में लिखा भी है-''चतुर्वेदी जी हिंदी के तीन श्रेष्ठ प्रलय गीत-गायकों में से एक हैं। राष्ट्र के अनेक बलिदानियों ने इनके गीत गाते-गाते मातृभूमि को अपने प्राणों की भेंट चढ़ाई है। देश की सूखी नसों में इनकी रचनाएँ अब भी नई जवानी फूँकती हैं।''

जीवन परिचय– हिंदी जगत के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक एवं पत्रकार पं० माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 ई. को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नंदलाल चतुर्वेदी था, जो एक प्रसिद्ध अध्यापक थे। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की। इसके पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बाँग्ला, गुजराती और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया।

ये कुछ समय तक अध्यापक के रूप में भी कार्यरत रहे। इसके पश्चात् इन्होंने खंडवा में 'कर्मवीर' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन कार्य आरंभ किया। सन् 1913 ई. में ये मासिक पत्रिका 'प्रभा' के संपादक पद पर नियुक्त हुए। इसी समय ये गणेशशंकर विद्यार्थी के संपर्क में आए और उन्हीं के विचारों से प्रभावित होकर ये स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गए आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे, जिस कारण इन्हें अनेक बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी। सन् 1943 ई. में जेल से बाहर आने पर चतुर्वेदी जी 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। हरिद्वार के महंत शांतानंद द्वारा चाँदी के रुपयों से इनका तुलादान किया गया। भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्म विभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा इनकी रचना 'हिमतरंगिनी' के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी महान रचनाओं के लिए चतुर्वेदी जी को सागर विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1959 ई. में डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से युवा वर्ग में नव-जागरण एवं वीरता का भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। 30 जनवरी सन् 1968 ई. को इनका निधन हो गया।

साहित्यिक परिचय– माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक जीवन पत्रकारिता से प्रारंभ हुआ। इनमें देशप्रेम की प्रबल भावना विद्यमान थी। अपने निजी संघर्षों, वेदनाओं और यातनाओं को इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया। 'कोकिल बोली' शीर्षक कविता में इनके बंदी जीवन के समय प्राप्त यातनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। इनका संपूर्ण साहित्यिक जीवन राष्ट्रीय विचारधाराओं पर आधारित है। ये आजीवन देशप्रेम और राष्ट्र कल्याण के गीत गाते रहे। इनके राष्ट्रवादी भावनाओं पर आधारित काव्य में त्याग, बलिदान,कर्तव्य-भावना और समर्पण के भाव निहित है। ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों को देखकर इनका अंतर्मन ज्वालामुखी की तरह धधकता रहता था। अपनी कविताओं में प्रेरणा, हुंकार, प्रताड़ना,उद्बोधन और मनुहार के भावों को भरकर ये भारतीयों की सुप्त चेतना को जगाते रहे। भारतीय संस्कृति, प्रेम, सौंदर्य और आध्यात्मिकता पर भी इन्होंने अनेक हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किए हैं।

2. माखनलाल चतुर्वेदी की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

कृतियाँ– चतुर्वेदी जी ने गद्य एवं काव्य दोनों विषयों में रचनाएँ की। इनके द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं–

(अ) कृष्णार्जुन-युद्ध– इसमें पौराणिक नाटक को भारतीय नाट्य-परंपरा के अनुरूप प्रस्तुत किया गया है। अभिनय की दृष्टि से यह अत्यंत सशक्त रचना है।

(ब) साहित्य-देवता– यह चतुर्वेदी के निबंधों का संग्रह है। इसमें संकलित सभी निबंध भावप्रधान हैं।

(स) हिमतरंगिनी– इस रचना पर इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

(द) कला का अनुवाद– यह चतुर्वेदी जी की कहानियों का संग्रह है।

(य) संतोष, बंधन-सुख– इनमें गणेशशंकर विद्यार्थी के जीवन से संबंधित स्मृतियों का संकलन है।

(र) रामनवमा– इस कविता संग्रह में देशप्रेम एवं प्रभुप्रेम को समान रूप से वर्णित किया गया है।

(ल) 'युगचरण', 'समर्पण', 'हिमकिरीटिनी', 'वेणु लो गूँजे धरा' आदि इनकी अन्य काव्य रचनाएँ हैं।

भाषागत विशेषताएँ– चतुर्वेदी जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है तथा कई स्थानों पर विषय पर अनुसार उर्दू एवं फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। ये अपनी भाषा के माध्यम से जटिल से जटिल विषय को भी सरल एवं सरस बनाने में सक्षम थे। इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में त्याग, बलिदान, कर्तव्य-भावना एवं समर्पण के भाव को मुख्यत: वर्णित किया है। इनकी कविताओं में वीर एवं शृंगार रस की प्रधानता है।

इनकी छंद योजना में भी नवीनता है। इन्होंने अपनी कविताओं में गेय छंद के साथ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग किया है। चतुर्वेदी जी कविताओं में भाव पक्ष की अपेक्षा कला-पक्ष को प्रमुखता देते थे। इन्होंने शैली के रूप में ओजपूर्ण भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। चतुर्वेदी जी की कविताओं में कल्पना ऊँची उड़ान के साथ ही भावों की तीव्रता भी प्रदर्शित होती है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) मुझे तोड़ लेना ..... वीर अनेक।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'माखनलाल चतुर्वेदी' द्वारा रचित 'युगचरण' काव्यसंग्रह से 'पुष्प की अभिलाषा' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने पुष्प के माध्यम से देश पर बलिदान होने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– पुष्प उपवन के माली से प्रार्थना करता है कि हे माली! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में डाल देना, जिस मार्ग से होकर अनेक राष्ट्र-भक्त वीर, मातृभूमि पर अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए जा रहे हों। फूल उन वीरों की चरण-रज का स्पर्श पाकर भी अपने का धन्य मानेगा; क्योंकि उनके चरणों पर चढ़ना ही देश के बलिदानी वीरों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि है।

काव्यगत सौंदर्य– 1.कवि ने फूल के माध्यम से अपनी राष्ट्रीयता की भावना को व्यक्त किया है। **2.** कवि किसी प्रकार के सम्मान को प्राप्त करने की अपेक्षा एक आत्मबलिदानी सैनिक के समान स्वयं को समर्पित कर देना चाहता है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक एवं भावात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज, **7. अलंकार–** मानवीकरण **8. छंद–** तुकांत मुक्त।

(ब) पहन ले ..... उठ री जवानी!

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'माखनलाल चतुर्वेदी' द्वारा रचित 'हिमकिरीटिनी' काव्य संग्रह से 'जवानी' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्य में देश की युवा शक्ति में उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के कार्यों के प्रवृत्त होने का आह्वान किया गया है।

व्याख्या– प्रस्तुत पद्यांश में कवि नवयुवकों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि हे नवयुवकों की जवानी! तू उठ और दुर्गा की भाँति मनुष्यों के मुंडों की माला पहन ले। नरमुंडों की इस माला में तू अपने सिर को सुमेरु बना, अर्थात् बलिदान के क्षेत्र में तू सर्वोपरि बन। यदि आज समर्पण की आवश्यकता पड़े तो तू उससे पीछे मत हट। जिस प्रकार लहलहाते हुए धानों की हरियाली में धरती का जीवन झलकता है, ऐसे ही हे जवानी, तू भी उत्साह में भरकर धानी चूनर ओढ़ ले। प्राण-तत्व तेरे साथ है; अत: हे युवकों की जवानी! तू आलस्य को त्यागकर उठ खड़ी हो और सर्वत्र क्रांति ला दे।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने युवावस्था को संबोधित करते हुए यह अपेक्षा की है कि वह गतिशील, उत्साही और शिव संकल्पवाली बनें। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** उद्बोधन **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** उत्प्रेक्षा, अनुप्रास व उपमा **7. छंद–** तुकांत-मुक्त

(स) रक्त है? या ..... चल जवानी!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने अपनी ओजस्वी वाणी में वृक्ष और उसके फलों के माध्यम से युवकों में देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा प्रदान की है।

व्याख्या– कवि वीरों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि हे वीरो! तुम अपनी युवावस्था की परख अपने शीश देकर कर सकते हो। इस बलिदानी परीक्षण से तुम्हें यह भी ज्ञात हो जाएगा कि तुम्हारी धमनियों में शक्तिशाली रक्त दौड़ रहा है अथवा उनमें केवल शक्तिहीन पानी ही भरा हुआ है।

हे युवाओं! फल के भार से लदे हुए वृक्षों की ओर देखो। वे पृथ्वी की ओर अपना मस्तक झुकाए हुए हैं। कली के भीतर से झाँकते फल कली के संकल्पों (अरमानों) को बता रहे हैं। तुम्हारे हृदय से भी इसी प्रकार बलिदान हो जाने का संकल्प प्रकट होना चाहिए। यह तो बहुत ही प्यारा संकल्प है, इसीलिए पुष्प कली गर्व से सिर उठाए हुए हैं। जब फल पक गए, तब डालियों ने पृथ्वी की ओर सिर झुका दिया है। अब ये फल दूसरों के लिए अपना बलिदान करेंगे। हे मित्र नौजवानों! वृक्षों की ये शाखाएँ तुम्हें संकेत दे रही हैं कि औरों के लिए मर-मिटने को तैयार हो जाओ। वृक्षों ने फल के रूप में अपने सिर बलिदान हेतु दिए हैं। तुम भी अपना सिर देकर वृक्षों की इस बलिदान-परंपरा को अपने जीवन में उतारो, आचरण में ढालो और युग की आवश्यकतानुसार स्वयं को उसकी प्रगतिरूपी माला में गूँथते हुए आगे बढ़ते रहो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने देश के नवयुवकों को बलिदान की प्रेरणा दी है। **2.**वृक्षों पर फल आते हैं, जिन्हें वे स्वयं नहीं खाते, वरन् संसार उनका उपभोग करता है। यह उनकी परोपकारशीलता है, कवि युवकों से भी परोपकार की ऐसी भावना की आशा करता है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं उपमा **8. छंद–** मुक्त तुकांत।

(द) श्वान के सिर ..... मस्तानी जवानी!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने स्वाभिमान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए युवकों से उसे किसी भी कीमत पर न खोने का आह्वान किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि कहने को सिर तो कुत्ते का भी होता है,पर उसमें स्वाभिमान तो नहीं होता। वह तो अपनी क्षुधापूर्ति के लिए दूसरों की चाटुकारी करता फिरता है और उनके पैरों को चाटता रहता है। इसलिए स्वाभिमान के अभाव में उसकी वाणी में कोई शक्ति नहीं रह जाती। कुत्ता चाहे कितना ही जोर से भौंक ले, किंतु उसमें इतना साहस ही नहीं होता कि उसके भौंकने से सिंह डर जाए; क्योंकि दूसरे की रोटियाँ खाते ही उसका स्वाभिमान नष्ट हो जाता है। उसमें साहस नहीं रह जाता। इस प्रकार जीवित होने पर भी वह मरे हुए के समान हो जाता है; अत: हे देश के शक्तिस्वरूप नुवयुवकों! तुम्हें अपने स्वाभिमान की रक्षा करनी है और पराधीन नहीं रहना है, कुत्तों की भाँति रोटी के टुकड़ों के लिए अपने स्वाभिमान को नहीं खोना है। तुम्हें अपनी प्रचंड दुर्गा जैसी असीम शक्ति को आपसी झगड़ों में नष्ट नहीं करना है, अपितु उसे देश के दुश्मनों के संहार में लगाना है। तुम्हारी ऐसी मस्तानी जवानी का सारी दुनिया लोहा मानती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इन पंक्तियों में कवि ने स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी है, जो कवि की उदांत भावनाओं का परिचय देती है। **2.** कवि ने देश के युवाओं को स्वाभिमान की प्रेरणा देने के लिए स्वाभिमान रहित व्यक्तियों की उपमा कुत्ते से की है। **3.भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं उपमा **8. छंद–** मुक्त एवं तुकांत।

(य) टूटता-जुड़ता ..... है, जवानी!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने युवकों को देश के गौरव की रक्षा के लिए, देश के क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित किया है।

व्याख्या– चतुर्वेदी जी कहते हैं कि हे युवकों! समय का भूगोल हमेशा एक जैसा नहीं रहा। तुमने जब-जब क्रांति की है, तब-तब यह टूटा है और जुड़ा है अर्थात् नए-नए राष्ट्र बने हैं। तुम्हारी क्रांति का सत्कार करने के लिए ही यह ब्रह्मांड अनेक रंग-बिरंगे तारारूपी मणियों को अपनी गोद में लेकर प्रकट हुआ है। अत: तुम्हारा स्वभाव इतना ओजस्वी होना चाहिए, जिससे कि विश्व के मानचित्र और इतिहास बदला जा सके। हे युवकों! तुम्हें चाहिए कि तुम अपने जीवन की जगमगाहट से देश के गौरव को प्रकाशित करो, किन्तु जिनके हृदय बर्फ की तरह ठंडे पड़ गए हैं, वे उसी प्रकार क्रांति नहीं कर सकते हैं, जिस प्रकार कि ठंडा बारूद नहीं जल सकता। हे युवकों! तुम यदि प्रलय की भाँति पराधीनता और अन्याय के प्रति क्रांति नहीं कर सकते तो तुम्हारी जवानी व्यर्थ है। तुम चाहो तो पृथ्वी की भी तरबूज की तरह दो फाँक कर सकते हो। हे देश के युवकों की जवानी! तू यदि देश की आजादी के लिए अपन रक्तरूपी अमर पानी दे दे तो तू अमर हो जाएगी और संसार में तेरा उदाहरण देकर तुझे सराहा जाएगा।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि का मानना है कि विध्वंस की गोद से ही निर्माण के पुष्प खिलते हैं और प्रलय के बाद ही नई सृष्टि का निर्माण होता है। कवि ने यहाँ इसी भावना को व्यक्त करते हुए, देश की युवाशक्ति को बलिदान तथा अपने शीश को अर्पण करके मृत्यु का वरण करने की प्रेरणा दी है। जिससे राष्ट्र का कल्याण हो सके। **2.** युवा शक्ति के द्वारा ही परिवर्तन संभव है, अत: युवाओं को क्रांति के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक एवं उद्‌बोधनात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, उपमा एवं रूपक **8. छंद–** मुक्त तुकांत।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि फूल के माध्यम से अपने भाव स्पष्ट करते हैं। फूल कहता है कि मुझे अभिलाषा नहीं है कि

कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए बनाई जाने वाली माला में मुझे गूँथे अर्थात् कवि कहता है कि मुझे किसी सम्मान की चाह नहीं है, मुझे तो देशप्रेम के लिए समर्पित व बलिदान होने से ही गौरव का अनुभव होता है।

(ब) मसल कर, अपने इरादों सी, उठा कर, दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें?

भाव स्पष्टीकरण– कवि माखनलाल जी युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि हे नौजवानों! तुम्हारे पास अपने ऊँचे संकल्पों को पूरा करने के लिए दो हथेलियाँ हैं। अपनी उन हथेलियों को अपने ऊँचे संकल्पों के समान उठाकर तुम पृथ्वी को गोल कर सकते हो अर्थात् अपने प्रयासों से तुम बड़ी से बड़ी बाधा को हटाकर पृथ्वी का स्वरूप बदल सकते हो।

(स) विश्व है असि का?–नहीं संकल्प का है! हर प्रलय का कोण काया–कल्प का है।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ मानवता की भावना को स्पष्ट करते हुए कहता है कि क्या यह संसार तलवार का है? क्या इसे शस्त्रों के द्वारा ही जीता जा सकता है? नहीं ऐसा नहीं है। यह संसार दृढ़ संकल्प वाले व्यक्तियों का है, जिस पर तलवार के द्वारा नहीं अपितु दृढ़ निश्चय द्वारा विजय पाई जा सकती है। प्रत्येक प्रलय का उद्देश्य संसार में क्रांति लाना होता है, अत: नवयुवकों के संकल्प से विश्व में परिवर्तन आरंभ होते हैं, उनके संकल्पों से एक क्रांति आ जाती है, अत: युवकों को इस क्रांति के लिए अग्रसर होना चाहिए अर्थात् संसार में हिंसा का त्याग कर दृढ़ निश्चय कर नवयुवकों को परिवर्तन के लिए अग्रसर होना चाहिए। जिससे मानवता का विकास हो।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'भारतीय आत्मा' के नाम से विख्यात हैं–

(अ) मीराबाई (ब) सूरदास
(स) **माखनलाल चतुर्वेदी** (द) बिहारीलाल

2. माखनलाल जी ने निम्न में से कौन–सी पत्रिका का संपादन किया?

(अ) हंस (ब) चाँद
(स) नंदन (द) **कर्मवीर**

3. माखनलाल चतुर्वेदी की रचना है–

(अ) सरयू पार की यात्रा (ब) भारत दुर्दशा
(स) कन्यादान (द) **युगचरण**

4. माखनलाल चतुर्वेदी की रचना नहीं है?

(अ) समर्पण (ब) साहित्य–देवता
(स) **प्रिय–प्रवास** (द) हिमकिरीटिनी

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण–बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) भूमि–सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी।।

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में उपमा अलंकार है।

(ब) तुम न खेलो ग्राम–सिंहों में भवानी।

उ०– यहाँ रूपक अलंकार है।

(स) लाल चेहरा है नहीं–फिर लाल किसके?

उ०– यहाँ यमक अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) ये न मग हैं, तव चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर देखा–देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा की मेख हैं ये!

प्राण-रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी!

उ०– **काव्यगत सौंदर्य– 1.** कवि ने देश की युवा शक्ति को सशक्त प्रेरणात्मक स्वर में राष्ट्र कल्याण का पथ प्रशस्त करने का संदेश दिया है। **2.** यहाँ राष्ट्र कल्याण के पथ पर बलिदान हो जाने का भाव मुखरित हुआ है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास एवं रूपक **8. छंद–** तुकांत मुक्त।

(ब) **लाल चेहरा है नहीं-फिर लाल किसके?**
लाल खून नहीं? अरे, कंकाल किसके?
प्रेरणा सोई कि आटा दाल किसके?
सिर न चढ़ पाया कि छापा-माल किसके?
वेद की वाणी कि हो आकाश-वाणी,
धूल है जो जग नहीं पाई जवानी।

उ०– **काव्यगत सौंदर्य– 1.** कवि ने बताया है कि जवानी वही है, जिसमें ओज हो, प्रेरणा हो तथा बलिदान करने की भावना हो **2.** त्याग की भावना को ही प्रेम की शोभा बताया गया है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ी बोली **4. शैली–** भावात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** यमक, अनुप्रास **8. छंद–** मुक्त तुकांत

(छ) **पाठ्येतर सक्रियता**

विद्यार्थी स्वयं करें।